ISSN 2454-5163

प्रकाशन तिथि : 26 मई 2017, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 35, अंक 11, कुल पृष्ठ 28

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

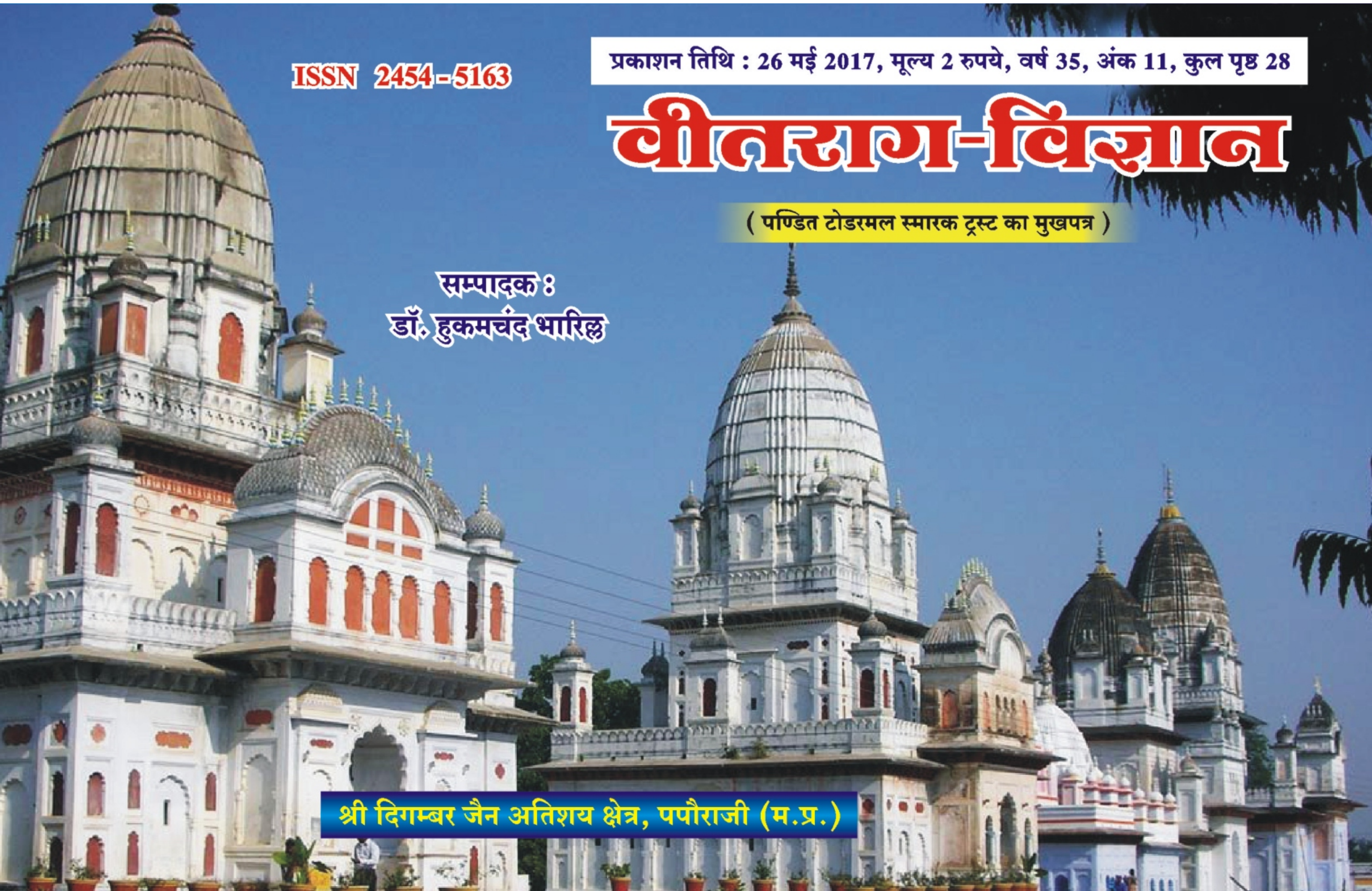

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, पपौराजी (म.प्र.)

वीतराग-विज्ञान (406)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7200
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10200**

ज्ञायक स्वभाव ही ज्ञान का साधन

राग में और निमित्तों में ज्ञान का ज्ञेय होने की शक्ति है; किन्तु ज्ञान का साधन होने की शक्ति नहीं है। ज्ञान का ज्ञेय होने पर भी जो उन्हें ज्ञान का साधन मानते हैं, वे बौद्धमती के समान मिथ्यादृष्टि हैं। ज्ञान का साधन तो सम्पूर्ण ज्ञायक स्वभाव है, उसे साधन न बनाकर परज्ञेयों को साधन मानता है अर्थात् ज्ञानस्वभाव में एकता न करके परज्ञेयों के साथ एकता मानता है, उसके ज्ञान का कार्य नहीं होता; किन्तु अज्ञान होता है। जातिस्मरणज्ञान, जिनप्रतिमादर्शन, वेदना आदि को सम्यक्त्वोत्पत्ति के कारण कहे हैं, वे सब उपचार से उन-उन निमित्तों का ज्ञान कराने के लिये कहे हैं, परमार्थ साधन तो अपना चिदानन्द भगवान ही है। यह एक ही साधन है - "एक औषधि सौ रोगों को नष्ट कर देती है" उसी प्रकार इस एक ही स्वभाव साधन का स्वीकार अन्य समस्त बाह्य साधनों के रोग को नष्ट कर देता है अर्थात् स्वभाव साधन का स्वीकार करने से किन्हीं भी बाह्य साधनों की मान्यता छूट जाती है।

– आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 536-537

वीतराग-विज्ञान

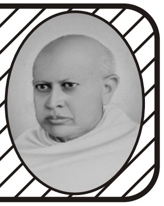

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 35 (वीर नि. संवत् - 2543) 406 अंक : 11

जे दिन तुम विवेक बिन खोये...

जे दिन तुम विवेक बिन खोये।।टेक।।

मोह वारुणी पी अनादि तैं, परपद में चिर सोये।
सुखकरंड चितपिंड आपपद, गुन अनन्त नहिं जोये।।1।।

होय बहिर्मुख ठानि राग रुख, कर्म बीज बहु बोये।
तसु फल सुख दुःख सामग्री लखि, चित में हरषे रोये।।2।।

धवल ध्यान शुचि सलिलपूर तैं, आस्रव मल नहिं धोये।
परद्रव्यनि की चाह न रोकी, विविध परिग्रह ढोये।।3।।

अब निज में निज जान नियत तहाँ निज परिनाम समोये।
यह शिवमारग समरस सागर 'भागचंद' हित तो ये।।4।।

– कविवर पण्डित भागचन्दजी

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं
श्री नेमिनाथ दिग.जैन नया मंदिर ट्रस्ट और अ.भा. जैन युवा फैडरेशन,
खनियांधाना द्वारा आयोजित

51वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 21 मई 2017 से 7 जून 2017 तक

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक आत्मार्थी विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं के माध्यम से भरपूर लाभ।
- पाठशाला के अध्यापकों को बालबोध पाठमालायें एवं वीतराग-विज्ञान पाठमालाओं के अध्यापन हेतु विशेष प्रशिक्षण।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।
- बालकों हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष कक्षायें।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अतः महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

(1) ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458;
Email - ptstjaipur@yahoo.com
(2) श्री नंदीश्वर दिगम्बर जैन मन्दिर, चेतनबाग, खनियांधाना, जिला-शिवपुरी 473990 (म.प्र.) मोबाइल -09575305898 (सोमिल शास्त्री), 09644122108 (आकाश शास्त्री)

सम्पादकीय

कुन्दकुन्द शतक अनुशीलन

(गतांक से आगे ...)

दर्शनज्ञानचारित्र का सेवन

अब इस गाथा में दर्शन-ज्ञान-चारित्र के सेवन करने की प्रेरणा देते हैं; क्योंकि **निश्चय से वे तीनों एक आत्मा ही हैं।**

(११)

दंसणणाणचरित्ताणि सेविदव्वाणि साहुणा णिच्चं।
ताणि पुण जाण तिण्णवि अप्पाणं चेव णिच्छयदो।।

(हरिगीत)

चारित्र दर्शन ज्ञान को सब साधुजन सेवें सदा।
ये तीन ही हैं आतमा बस कहे निश्चयनय सदा।।

साधु पुरुषों को सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक्चारित्र का नित्य सेवन करना चाहिए; क्योंकि उन तीनों को निश्चय से एक आत्मा ही जानो।

गाथा में प्राप्त **साहुणा** पद का अर्थ यहाँ **सज्जनोत्तम** व्यक्ति हैं। कुछ लोग इसका अर्थ **मुनिराज** करते हैं और उसके आधार पर यह कहते हैं कि यह **समयसार** नामक ग्रन्थ मुनिराजों के स्वाध्याय की वस्तु है, गृहस्थ श्रावकों को इसका स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

उक्त प्रसंग की चर्चा समयसार अनुशीलन भाग १ में विस्तार से की गई है। जिज्ञासु पाठकों को अपनी जिज्ञासा की शान्ति वहाँ से करना चाहिए। पुनरुक्ति के भय से यहाँ उसे विस्तार देना संभव नहीं है।

यह समयसार परमागम की १६वीं गाथा है। इसका भाव आत्मख्याति टीका में आचार्य अमृतचन्द्र इसप्रकार स्पष्ट करते हैं –

''यह आत्मा जिस भाव से साध्य तथा साधन हो, उस भाव से ही नित्य

सेवन करने योग्य है, उपासना करने योग्य है। इसप्रकार स्वयं विचार करके दूसरों को व्यवहार से समझाते हैं कि साधुपुरुष को दर्शन-ज्ञान-चारित्र सदा सेवन करने योग्य हैं, सदा उपासना करने योग्य हैं; किन्तु परमार्थ से देखा जाये तो ये तीनों एक आत्मा ही हैं, आत्मा की ही पर्यायें हैं; अन्य वस्तु नहीं हैं।

जिसप्रकार देवदत्त नामक पुरुष के ज्ञान, दर्शन और आचरण, देवदत्त के स्वभाव का उल्लंघन न करने से देवदत्त ही हैं; अन्य वस्तु नहीं।

उसीप्रकार आत्मा में भी घटित कर लेना चाहिए कि **आत्मा के ज्ञान, श्रद्धान और आचरण आत्मा के स्वभाव का उल्लंघन न करने से आत्मा ही है, अन्य वस्तु नहीं।**

इसलिए यह स्वत: ही सिद्ध हो गया कि एक आत्मा ही उपासना करने योग्य है, सेवन करने योग्य है।''

प्रश्न – टीका में निश्चय-व्यवहार की संधि स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि स्वयं अन्तर में तो यह निश्चय करें कि एक आत्मा ही सेवन करने योग्य है, उपासना करने योग्य है; परन्तु दूसरों को समझाते समय व्यवहार से ऐसा समझावें कि दर्शन-ज्ञान-चारित्र का सदा सेवन करना चाहिए; क्योंकि ये तीनों एक आत्मा ही हैं, आत्मा की ही पर्यायें हैं, अन्य वस्तु नहीं।

उक्त कथन में प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जब दर्शन-ज्ञान-चारित्र आत्मा ही हैं, तो फिर स्वयं के समझने में और दूसरों को समझाने में यह अन्तर क्यों हो ? क्या यह ऐसी बात नहीं हुई कि हाथी के दाँत खाने के और तथा दिखाने के और ?

उत्तर – नहीं, भाई ! ऐसी बात नहीं है। जबतक भेद करके न समझाया जाये, तबतक अबोध शिष्य की समझ में बात आती नहीं है। यद्यपि इस बात को आठवीं गाथा में विस्तार से स्पष्ट कर दिया गया है, तथापि यहाँ भी संक्षेप में प्रकाश डालते हैं।

जब ज्ञानगुण आत्मसन्मुख होकर आत्मा का अनुभव करता है, तब आत्मा को जाननेरूप ज्ञान का जो निर्मल परिणमन होता है, उसे सम्यग्ज्ञान

कहते हैं; उसीसमय आत्मसन्मुखता की दशा में ही श्रद्धागुण पर में से एकत्व-ममत्व तोड़कर शुद्धनय के विषयभूत भगवान आत्मा में जो अपनापन स्थापित करता है, श्रद्धागुण का वह आत्माश्रित निर्मल परिणमन सम्यग्दर्शन कहलाता है; उसीसमय जो आत्मा में ही उपयोग केन्द्रित होता है, आत्मा ही ध्यान का ध्येय बनता है और चारित्रगुण में अनंतानुबंधी कषाय के अभावरूप निर्मलता प्रगट होती है, वह सम्यक्चारित्र का अंश है।

दर्शन-ज्ञान-चारित्र की यह प्रकटता ही दर्शन-ज्ञान-चारित्र की उपासना कही जाती है, दर्शन-ज्ञान-चारित्र का सेवन कहा जाता है और यही आत्मा की उपासना है, आत्मा का सेवन है।

यदि अज्ञानी को यही कहते रहें कि आत्मा का सेवन करो, आत्मा की उपासना करो, तो उसकी समझ में कुछ भी न आये; अत: उसे व्यवहार से समझाते हैं कि दर्शन-ज्ञान-चारित्र की उपासना करो, दर्शन-ज्ञान-चारित्र का सेवन करो।

समझाने के लिए व्यवहार का आश्रय लेना ही पड़ता है। अत: यह ठीक ही कहा गया है – स्वयं तो यह निश्चय करे कि शुद्धनय का विषयभूत एक भगवान आत्मा ही उपास्य है; पर शिष्यों को व्यवहार से यह समझावे कि दर्शन-ज्ञान-चारित्र का सेवन करो।

''अभेद सो निश्चय और भेद सो व्यवहार'' अथवा ''एक सो निश्चय और अनेक सो व्यवहार'' – निश्चय-व्यवहार की उक्त परिभाषाओं के अनुसार **यहाँ अभेद एक आत्मा के सेवन को निश्चय और उसके भेदरूप दर्शन-ज्ञान-चारित्र के सेवन को व्यवहार कहा गया है।**

ध्यान रहे, अभेद को एक और अमेचक भी कहा जाता है और भेद को अनेक और मेचक भी कहा जाता है। इसप्रकार अभेद, अमेचक, **एकाकार आत्मा की आराधना निश्चय आराधना है** और भेद, मेचक और **अनेकाकार आत्मा की आराधना व्यवहार आराधना है।**

दर्शन-ज्ञान-चारित्र – ये तीन हैं, अत: अनेक हैं, अनेकाकार हैं, मेचक

हैं, भेद हैं; अत: इनकी उपासना को व्यवहारोपासना कहा जाता है।

शुद्धनय का विषयभूत भगवान आत्मा एक है, एकाकार है, अभेद है, अमेचक है; अत: उसकी उपासना को निश्चयोपासना कहा गया है।

वहाँ अनेकाकार होना, मेचक होना ही अशुद्धि है, मलिनता है और एकाकार होना, अमेचक होना ही शुद्धि है, निर्मलता है। अत: **एक आत्मा की उपासना शुद्धनय है और दर्शन-ज्ञान-चारित्र की उपासना अशुद्धनय है।** यहाँ इससे अधिक और कुछ नहीं है।

प्रश्न – जब आत्मा की आराधना और दर्शन-ज्ञान-चारित्र की आराधना एक ही बात है तो फिर दोनों में से एक को शुद्ध कहना और दूसरे को अशुद्ध कहना कहाँ तक उचित है ?

उत्तर – अरे भाई, इसमें कुछ भी अनुचित नहीं है; क्योंकि **यहाँ अभेद को शुद्धि और भेद को अशुद्धि कहना ही अभीष्ट है।**

प्रश्न – ऐसा क्यों है ?

उत्तर – इसलिए कि भेद के लक्ष्य से **विकल्पों की उत्पत्ति होती है** और अभेद के लक्ष्य से **विकल्पों का शमन होकर निर्विकल्प दशा उत्पन्न होती है।**

आत्मा का अनुभव निर्विकल्प दशा में ही होता है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की उत्पत्ति भी निर्विकल्प दशा में ही होती है।

हाँ, इनकी **सत्ता विकल्पात्मक दशा में भी रह सकती है, पर उत्पत्ति विकल्पात्मक दशा में नहीं हो सकती है।**

यदि मोक्ष की है कामना

(१२-१३)

जह णाम को वि पुरिसो रायाणं जाणिऊण सद्दहदि।
तो तं अणुचरदि पुणो अत्थत्थीओ पयत्तेण।।
एवं हि जीवराया णादव्वो तह य सद्दहेदव्वो।
अणुचरिदव्वो य पुणो सो चेव दु मोक्खकामेण।।

(हरिगीत)

'यह नृपति है' यह जानकर अर्थार्थिजन श्रद्धा करें।
अनुचरण उसका ही करें अति प्रीति से सेवा करें।।
यदि मोक्ष की है कामना तो जीवनृप को जानिए।
अति प्रीति से अनुचरण करिये प्रीति से पहिचानिए।।

जिसप्रकार कोई धनार्थी पुरुष राजा को जानकर उसका श्रद्धान करता है और उसका प्रयत्नपूर्वक अनुचरण करता है; उसीप्रकार मुमुक्षुओं को जीवरूपी राजा को जानना चाहिये, उसका श्रद्धान करना चाहिए एवं उसी का अनुचरण भी करना चाहिए, उसी में तन्मय हो जाना चाहिए।

तात्पर्य यह है कि आत्मार्थियों को सर्वप्रथम निज भगवान आत्मा को जानना चाहिए, फिर यह श्रद्धान करना चाहिए कि यह भगवान आत्मा मैं ही हूँ। इसके पश्चात् उसी में लीन हो जाना चाहिए; क्योंकि **निज भगवान आत्मा का ज्ञान, श्रद्धान और ध्यान ही निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र है।**

ये गाथायें समयसार परमागम की १७वीं एवं १८वीं गाथायें हैं।

जो बात विगत (११वीं) गाथा में कही गई है, वही बात इन गाथाओं में उदाहरण देकर समझाई गई है।

आचार्य जयसेन इन गाथाओं की व्याख्या करते समय आत्मानुभूति पर विशेष बल देते हैं। वे स्वसंवेदनरूप ज्ञान से जानने को ही जानना कहते हैं और निर्विकल्प रूप समाधि द्वारा अनुभव करने को कहते हैं।

आचार्य अमृतचन्द्र आत्मख्याति में इन गाथाओं के भाव को इसप्रकार स्पष्ट करते हैं –

''जिसप्रकार धनार्थी पुरुष पहले तो राजा को प्रयत्नपूर्वक जानता है, फिर उसका श्रद्धान करता है और फिर उसी का अनुचरण करता है, सेवा करता है, उसकी आज्ञा में रहता है, उसे हर तरह से प्रसन्न रखता है;

उसीप्रकार मोक्षार्थी पुरुष को पहले तो आत्मा को जानना चाहिए, फिर उसी का श्रद्धान करना चाहिए; और फिर उसी का अनुचरण करना चाहिए,

अनुभव के द्वारा उसी में लीन हो जाना चाहिए; क्योंकि साध्य की सिद्धि की उपपत्ति इसीप्रकार सम्भव है, अन्यप्रकार से नहीं।

अब इस बात को विशेष स्पष्ट करते हैं – जब आत्मा को, अनुभव में आने पर अनेक पर्यायरूप भेदभावों के साथ मिश्रितता होने पर भी सर्वप्रकार से भेदविज्ञान में प्रवीणता से **'जो यह अनुभूति है, सो ही मैं हूँ'** – ऐसे आत्मज्ञान से प्राप्त इस आत्मा को जैसा जाना है, वैसा ही है – इसप्रकार की प्रतीति जिसका लक्षण है – ऐसा श्रद्धान उदित होता है; तब समस्त अन्यभावों का भेद होने से नि:शंक स्थिर होने में समर्थ होने से आत्मा का आचरण उदय होता हुआ आत्मा को साधता है। ऐसे साध्य आत्मा की सिद्धि की इसीप्रकार उपपत्ति है।

परन्तु जब ऐसा अनुभूतिस्वरूप भगवान आत्मा आबाल-गोपाल सबके अनुभव में सदा स्वयं ही आने पर भी अनादिबंध के वश परद्रव्यों के साथ एकत्व के निश्चय से मूढ़ – अज्ञानीजन को 'जो यह अनुभूति है, वही मैं हूँ' – ऐसा आत्मज्ञान उदित नहीं होता और उसके अभाव से, अज्ञात का श्रद्धान गधे के सींग के समान है, इसलिए श्रद्धान भी उदित नहीं होता; समस्त अन्यभावों के भेद से आत्मा में नि:शंक स्थिर होने की असमर्थता के कारण आत्मा का आचरण उदित न होने से आत्मा को साध नहीं सकता। इसप्रकार साध्य आत्मा की सिद्धि की अन्यथा अनुपपत्ति है।''

आचार्य अमृतचन्द्र के उक्त कथन का पहला पैरा तो एकदम गाथा के अनुसार ही है; किन्तु दूसरे और तीसरे पैरे में वे साध्य की सिद्धि की उपपत्ति व अनुपपत्ति किसप्रकार होती है – यह बात स्पष्ट करते हैं; जो गंभीरता से विचार करने योग्य है, गहराई से समझने योग्य है। **(क्रमश:)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

21 मई से 7 जून	खनियांधाना (म.प्र.)	प्रशिक्षण शिविर
9 जून से 9 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
16 से 20 जुलाई	चैतन्यधाम-अहमदाबाद	गुरुवाणीमंथन शिविर
23 जुलाई से 1 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर

छहढाला प्रवचन

सम्यग्ज्ञानपूर्वक चारित्र का उपदेश

सम्यग्ज्ञानी होय बहुरि, दृढ चारित्र लीजै।
एकदेश अरु सकलदेश, तसु भेद कहीजै।।
त्रस हिंसा को त्याग, वृथा थावर न संहारै।
परवध कार कठोर निंद्य, नहिं वचन उचारै।।१०।।
जल मृतिका बिन और, नाहिं कछु गहै अदत्ता।
निज बनिता बिन सकल, नारि सौं रहैं विरत्ता।।
अपनी शक्ति विचार, परिग्रह थोरो राखै।
दश दिश गमन प्रमान ठान, तसु सीम न नाखैं।।११।।
ताहू में फिर ग्राम, गली गृह बाग बजारा।
गमनागमन प्रमान, ठान अन सकल निवारा।।
काहू की धनहानि, किसी जय हार न चिन्तैं।
देय न सो उपदेश, होय अघ बनज कृषी तैं।।१२।।
कर प्रमाद जल भूमि, वृक्ष पावक न विराधै।
असि धनु हल हिंसोपकरन, नहिं दे जस लाधै।।
राग-द्वेष करतार, कथा कबहूँ न सुनीजै।
और हु अनरथदंड हेतु अघ, तिन्है न कीजै।।१३।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की चौथी ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-पूर्वक ही चारित्राराधना होती है, इसीलिए सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान के पश्चात् अब चारित्र का वर्णन करेंगे।

पुरुषार्थसिद्ध्युपाय में भी कहा है–

न हि सम्यग्व्यपदेशं चरित्रमज्ञानपूर्वकं लभते।
ज्ञानानन्तरमुक्तं चारित्राराधनं तस्मात् ।।

अज्ञानपूर्वक होनेवाले चारित्र को सच्चा चारित्र नहीं कहते, इसलिए चारित्र की आराधना सम्यग्ज्ञान के बाद ही कही गई है।

चारित्र के मुख्य दो भेद कहे हैं – देशचारित्र और सकलचारित्र। पाँचवें गुणस्थानवर्ती श्रावक को देशचारित्र कहा है तथा छठवें-सातवें गुणस्थानवर्ती मुनिराज को सकल चारित्र होता है। सकलचारित्र का वर्णन छठवी ढाल में करेंगे। यहाँ १० से १३वें छन्द तक देशचारित्र का वर्णन करते हैं।

श्रावक के निम्नानुसार कुल १२ व्रत हैं –

पाँच अणुव्रत – अहिंसाणुव्रत, सत्याणुव्रत, अचौर्याणुव्रत, ब्रह्मचर्याणुव्रत, परिग्रहपरिमाणाणुव्रत।

तीन गुणव्रत – दिग्व्रत, देशावकाशिक व्रत, अनर्थदण्ड त्यागव्रत।

चार शिक्षाव्रत – सामायिक, प्रोषध, भोगोपभोग परिमाण और अतिथि संविभाग रूप वैयावृत।

इन बारह व्रतों में से पाँच अणुव्रतों और तीन गुणव्रतों का वर्णन इन चार छन्दों में है। चार शिक्षाव्रतों का वर्णन आगे करेंगे।

ये व्रत श्रावक को पाँचवें गुणस्थान में होते हैं अर्थात् सम्यग्ज्ञान पूर्वक ही होते हैं। ज्ञान के बिना व्रत सच्चे नहीं होते, अत: विशेषरूप से कहा कि 'सम्यग्ज्ञानी होय बहुरि दृढ चारित लीजे' सम्यग्ज्ञान उपरान्त जहाँ ऐसी वीतरागता हुई कि अप्रत्याख्यान संबंधी क्रोधादि कोई कषाय भी नहीं होती और शेष कषायें भी मन्द हैं, मर्यादित हैं, जिसके अन्दर की वीतरागी शान्ति विशेष बढ गई है – ऐसी दशावाले श्रावक को पाँचवाँ गुणस्थान होता है और उसको अहिंसादि व्रत होते हैं, उसका यह वर्णन है।

अरे ! श्रावकपना किसे कहा जाय ? सर्वार्थसिद्धि के देवों की अपेक्षा भी जिसकी शान्ति अधिक है। ऐसी दशा अन्तर में आत्मा के अनुभव बिना नहीं हो सकती। अत: हे जीवो ! प्रथम आत्मा का सम्यग्ज्ञान करके फिर चारित्र दशा का आराधन करो। मुनिपना हो सके तो मुनिपना प्रगट करो, यदि अभी मुनिपना न हो सके तो श्रावक के चारित्र का आचरण करो – देशव्रत का पालन करो। **(क्रमश:)**

नियमसार प्रवचन –

शुद्ध आत्मा को कर्तृत्व का अभाव

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ७७ से ८१ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथाएं मूलत: इसप्रकार हैं –

णाहं णारयभावो तिरियत्थो मणुवदेवपज्जाओ।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।७७।।
णाहं मग्गणठाणो णाहं गुणठाण जीवठाणो ण।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।७८।।
णाहं बालो वुड्ढो ण चेव तरुणो ण कारणं तेसिं।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।७९।।
णाहं रागो दोसो ण चेव मोहो ण कारणं तेसिं।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।८०।।
णाहं कोहो माणो ण चेव माया ण होमि लोहो हं।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।८१।।

(हरिगीत)

मैं नहीं नारक देव मानव और तिर्यग मैं नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।। ७७।।
मार्गणास्थान जीवस्थान गुणथानक नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।। ७८।।
बालक तरुण बूढा नहीं इन सभी का कारण नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।। ७९।।
मैं मोह राग द्वेष न इन सभी का कारण नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।। ८०।।
मैं मान माया लोभ एवं क्रोध भी मैं हूँ नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।। ८१।।

नरक पर्याय, तिर्यंच पर्याय, मनुष्य पर्याय और देव पर्यायरूप मैं नहीं हूँ। इन पर्यायों का करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

मार्गणास्थान, गुणस्थान और जीवस्थान भी मैं नहीं हूँ। इनका करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

मैं बालक, वृद्ध या जवान भी नहीं हूँ और इन तीनों का कारण भी नहीं हूँ। उन तीनों अवस्थाओं का करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

मैं मोह, राग और द्वेष नहीं हूँ, इनका कारण भी नहीं हूँ। इनका करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

मैं क्रोध, मान, माया और लोभ भी नहीं हूँ। इनका करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

(गतांक से आगे....)

इस अधिकार में सर्वप्रथम पाँच गाथाओं द्वारा पाँच रत्नों का अवतरण किया गया है।

मैं नारकपर्याय, तिर्यंचपर्याय, मनुष्यपर्याय या देवपर्याय नहीं हूँ। मैं उनका कर्त्ता नहीं हूँ, कारयिता नहीं हूँ और कर्त्ता का अनुमोदक भी नहीं हूँ।

सम्यग्दृष्टि जीव को प्रतिक्रमण करते समय कैसी दशा होती है? उसकी बात यहाँ करते हैं। मैं चैतन्य ज्ञानस्वभावी आत्मा हूँ, ऐसे अस्तिस्वभाव के भान में नारकादि के भेद में नहीं – ऐसा वर्णन करने में आया है। अखण्ड ज्ञायकस्वभाव की एकाग्रता में ऐसे भेदों का अभाव है। धर्मीजीव मानता है कि मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ, नारकी के शरीर की दशारूप मैं नहीं हूँ। श्रेणिकराजा नरक में होने पर भी आत्मा चिदानन्दस्वभावी है – ऐसे भानवाले हैं।

आत्मा के भानसहित एकाग्रता करना, वह प्रतिक्रमण है। कोई तिर्यंच सम्यग्दृष्टि हो, तथापि वह समझता है कि मैं पशु की अवस्थारूप नहीं हूँ; वह शरीर को जड़ की पर्याय समझता है, अपना स्वरूप नहीं मानता। इसीप्रकार धर्मीजीव मनुष्य हो या देव हो, तो भी वह समझता है कि मैं तीनकाल के भवरहित हूँ – मैं तो ज्ञाता चैतन्यस्वरूप हूँ।

धर्मीजीव की दृष्टि एक समय की पर्याय की योग्यता का निषेध करके शुद्ध चैतन्यस्वभाव को स्वीकार करती है।

यहाँ कोई **शंका** करे कि शरीर आत्मा के भाव के कारण चलता दिखाई पड़ता है न?

समाधान :– आत्मा और शरीर का परस्पर निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है, उसका ज्ञान कराने के लिए व्यवहार से कथन आता है। व्यवहार तो ज्ञान करने के लिए है, किन्तु आदरणीय नहीं है। जब निश्चयनय से आत्मा एक समय की योग्यता को भी स्वीकार नहीं करता, तो फिर शरीर का कर्त्ता आत्मा कैसे हो सकता है ? पूर्वपर्याय में जो राग हुआ था, उसका स्वभावदृष्टि से सम्यग्दृष्टि कर्त्ता नहीं है, तथा उसके कारण से बँधे हुए कर्म और उसके निमित्त से मिले हुए शरीर को वह अपना नहीं मानता।

शरीर की क्रिया के ऊपर आत्मा का आधार नहीं है; आत्मा के कारण शरीर आता है – ऐसा माने तो स्थूल भूल है। आत्मा के कारण शरीर नहीं आता, शरीर तो शरीर के कारण से आता है, आत्मा की एक समय की पर्याय का उससे निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है और उस निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध जितना ही सम्पूर्ण आत्मा को मान लेना मिथ्यात्व है। 'मैं तो त्रिकाल ज्ञानस्वभावी आत्मा हूँ' – ऐसे अस्तिस्वभाव के स्वीकारपूर्वक वर्तमान योग्यता के निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध का ज्ञान करना अर्थात् त्रिकाल और वर्तमान दोनों का ज्ञान करना, वह प्रमाण है।

दृष्टि में पर्याय का आदर नहीं है, वह तो एक समय की पर्याय का निषेध करती है और मैं चैतन्यस्वभावी हूँ – ऐसा स्वीकार करती है। निश्चय से वर्तमान योग्यता को मैंने किया नहीं, कराया नहीं और मैं उसका अनुमोदक भी नहीं। अज्ञानी मानता है कि पुण्य किया हो तो सुन्दर शरीर मिले, कान मिलें तब वाणी सुनी जाए और धर्म प्राप्त हो; परन्तु ज्ञानीजीव तो कहते हैं कि मैं किसी भी शारीरिक अवस्था का रचयिता नहीं, प्रेरक नहीं, अनुमोदक भी नहीं, मुझे तो चैतन्य स्वभाव ही स्वीकार है।

मैं मार्गणास्थान, गुणस्थान या जीवस्थान नहीं; मैं उनका कर्त्ता नहीं, कारयिता नहीं और कर्त्ता का अनुमोदक भी नहीं हूँ।

सम्यग्दृष्टि जीव समझता है कि मैं तो अखण्ड ज्ञायकस्वभावी हूँ। गति आदि मार्गणास्थान के भेद, एक से लगाकर चौदह गुणस्थान तक के भेद, पंचेन्द्रिय आदि जीवस्थान के भेद मैं नहीं हूँ; उन भेदों का कर्त्ता, प्रेरक या अनुमोदक नहीं हूँ। वे भेद तो व्यवहारनय के विषय हैं, निश्चयदृष्टि उन भेदों को नहीं स्वीकारती। यह नहीं, वह नहीं; ऐसे भेदों में रुकने से तो राग की उत्पत्ति होती है, परन्तु ज्ञानी अस्तिस्वभाव के सन्मुख रहकर भेदाभ्यास करता है, वह यहाँ बतलाया गया है।

मैं बाल नहीं, वृद्ध नहीं, तरुण नहीं; उनका कारण भी नहीं। मैं उनका कर्त्ता नहीं, कारयिता नहीं और कर्त्ता का अनुमोदक भी नहीं हूँ।

आठ वर्ष के बालक-बालिका भी सम्यक्त्वाधिकारी हैं। वे मानते हैं कि मैं बाल नहीं हूँ। शरीर जड़ है। उसकी अवस्था जड़ के कारण होती है, मेरे कारण नहीं होती। मैं तो ज्ञानस्वरूपी हूँ। धर्मीजीव मानता है कि शरीर की किसी भी अवस्था का मैं कर्त्ता नहीं, करानेवाला नहीं, अनुमोदक नहीं हूँ। युवावस्था हो तो धर्म हो और वृद्धावस्था में धर्म न हो, यह बात उसे स्वीकार नहीं, वह मानता है कि मेरी धर्मदशा तो मेरे चैतन्यस्वभाव के आधार से है।

यहाँ कोई **शंका** करे कि शास्त्रों में ऐसा कथन आता है कि जबतक 'इन्द्रियाँ शिथिल न पड़ें, वृद्धावस्था न आवे, रोग-व्याधि न घेरे; तब तक धर्म कर लेना चाहिए' – इसका क्या अर्थ है?

समाधान – भाई! उपदेश के वचन ऐसे ही होते हैं। उनमें छुपा हुआ रहस्य कुछ भिन्न ही होता है। यदि वह रहस्य न समझे तो घोटाला हो जाता है। वे सब निमित्त के कथन हैं, जीव का पुरुषार्थ जागृत कराने के लिए उपदेश के वचन हैं। धर्म शरीर से नहीं होता, किन्तु शुद्धचैतन्यस्वभाव के आश्रय से होता है। धर्मीजीव बाहर के – संसार के कार्य करता हुआ दिखता हो तो भी शरीर अथवा राग की पर्याय का आश्रय नहीं लेता, स्वभाव का ही आश्रय लेता है।

उपदेशवाक्य के पीछे रहनेवाले रहस्य को समझकर अर्थ समझना चाहिए।

(क्रमशः)

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

समयसार कलश 262

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को इसी अंक से क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है। भूमिका के रूप में समयसार कलश 262 व 263 से प्रारम्भ किया गया प्रकरण पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत है।

(गतांक से आगे....)

अब कहते हैं कि – जाननेवाली ज्ञान पर्याय में आत्मा के स्वरूप को जानकर शुद्ध एक आत्मद्रव्य का लक्ष्य करके, उसे ही ध्यान का ध्येय बनाकर अनुभव करके प्रतीति करो। जब आत्मवस्तु अनुभवगोचर होकर प्रतीति में आती है, तब ही उसको सम्यग्ज्ञान होता है।

'पूर्वोक्त प्रकार से वस्तु का स्वरूप अनेकान्तमय होने से अनेकान्त अर्थात् स्याद्वाद सिद्ध हुआ' इस अर्थ का काव्य अब कहा जाता है –

(अनुष्टुप्)

एवं तत्त्वव्यवस्थित्या स्वं व्यवस्थापयन् स्वयम्।
अलंघ्यं शासनं जैनमनेकान्तो व्यवस्थितः ।।२६३।।

इसप्रकार अनेकान्त जो जिनदेव का अलंघ्य (जिसका किसी के द्वारा उल्लंघन न किया जा सके, उसे अलंघ्य कहते हैं) शासन है वह वस्तु के यथार्थ स्वरूप की व्यवस्थिति (व्यवस्था) द्वारा स्वयं अपने आपको स्थापित करता हुआ स्थित हुआ-निश्चित हुआ-सिद्ध हुआ।

भावार्थ – अनेकान्त अर्थात् स्याद्वाद, वस्तुस्वरूप को यथावत् स्थापित करता हुआ, स्वतः सिद्ध हो गया। वह अनेकान्त ही निर्बाध जिनमत है और यथार्थ वस्तुस्थिति को कहनेवाला है। कहीं किसी ने असत् कल्पना से वचनमात्र प्रलाप नहीं किया है। इसलिए हे निपुण पुरुषों! भलीभाँति विचार करके प्रत्यक्ष अनुमान-प्रमाण से अनुभव कर देखो।

इस कलश में कहते हैं कि – जिस समय परमात्मस्वरूप निजज्ञान मात्र आत्मा में पर्याय झुकती है, वह स्व से ही झुकती है, पर से नहीं। कर्म के मंद उदय से अथवा कर्म के अभाव से भी नहीं।

अहाहा...! वस्तु से मैं एक हूँ व पर्याय से अनेक हूँ तथा ये सब स्वयं से ही हैं, पर से नहीं – इसप्रकार सब ज्ञान में निश्चित हो जाता है।

इसप्रकार कहते हैं कि – अनेकान्त वीतराग सर्वज्ञदेव का अलंघ्य शासन है, अनेकान्त तो वस्तु का स्वरूप है। अहा! शक्ति से तो प्रत्येक आत्मा स्वयं परमेश्वर है; परन्तु ऐसा वस्तु का स्वरूप वीतराग-सर्वज्ञदेव ने प्रगट करके बताया है, इसकारण इसे यहाँ जैन परमेश्वर का शासन कहा है।

अहा! ऐसा यह जिनदेव का शासन अलंघ्य है। अन्दर में जिनस्वरूप भगवान आत्मा है। जो पुरुष अपने ऐसे निजस्वरूप को अबद्धस्पृष्ट, अनन्य, अविशेष, नियत, असंयुक्त देखता है, वह सर्व जिन शासन को देखता है – ऐसा समयसार गाथा १५ में आया है न!

इसतरह अनेकान्त वस्तु के यथार्थ स्वरूप की व्यवस्थिति द्वारा स्वयं अपने को स्थापित करते हुए सिद्ध हुआ।

अहाहा...! स्वयं स्वयं से ही स्वयं को जानता है। ऐसा ही भगवान आत्मा का स्वभाव है।

नियमसार में आता है कि – अपने शुद्धस्वरूप का श्रद्धान-ज्ञान-आचरणरूप रत्नत्रय ही नियम से कर्तव्य है। मूल गाथा इसप्रकार है –

णियमेण य जं कज्जं तं णियमं णाण-दंसण चरित्तं।
विवरीयपरिहरत्थं भणिदं खलु सारमिदि वयणं ।।३ ।।

भाई! पर्याय के स्वद्रव्य में ढलकर अन्तर्लीन होने पर अनेकान्तपना जो वस्तु का स्वरूप है, वह व्यवस्थित-सुनिश्चित होकर (जैसा है वैसा ही ज्ञान में ज्ञात होने पर) सिद्ध होता है और नियम से यही कर्तव्य है।

इस कलश का **भावार्थ** यह है कि – आत्मा स्वयं से सत् है और पर के किसी अंशपने भी नहीं है – यह सम्यक् अनेकान्त है। ऐसा नहीं कि – आत्मा स्वयं से भी है और पर से भी है। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : क्रमबद्ध में क्रमबद्ध की विशेषता है कि द्रव्य की ?

उत्तर : क्रमबद्ध में ज्ञायक द्रव्य की विशेषता है। क्रमबद्ध में अकर्तापन सिद्ध करके ज्ञायकपना बताया है।

प्रश्न : वस्तु में नियत और अनियत दोनों धर्म एक साथ हैं और दोनों ही ज्ञानी को स्वीकार हैं – ऐसी स्थिति में आप वस्तु को क्रमबद्ध ही क्यों कहते हैं, साथ वाले अक्रम को क्यों नहीं स्वीकारते ?

उत्तर : नियत और उसके साथ नियत के अतिरिक्त दूसरे अनियत अर्थात् पुरुषार्थ, काल, स्वभाव, ज्ञान, श्रद्धा, निमित्त आदि को ज्ञानी स्वीकार करता है। उसकी दृष्टि में नियत-अनियत का मेल है।

यहाँ अनियत का अर्थ अक्रमबद्ध नहीं है; अपितु नियत के साथ रहनेवाले नियत के अलावा पुरुषार्थ आदि धर्मों को यहाँ अनियत संज्ञा दी गई है। इसप्रकार वस्तु में नियत-अनियत दोनों धर्म एक समय में एक साथ रहते हैं। यही अनेकान्त स्वभाव है।

प्रश्न : सम्यक् नियतिवाद का क्या अर्थ है ?

उत्तर : जिस पदार्थ में, जिस समय में, जिस क्षेत्र में, जिस निमित्त से, जैसा होना है; वैसा ही होगा, उसमें किंचित् भी फेरफार करने में कोई समर्थ नहीं है – ऐसा ज्ञान में निर्णय करना सम्यक्नियतिवाद है और ऐसे निर्णय में स्वभाव की तरफ का अनंत पुरुषार्थ आ जाता है।

प्रश्न : मिथ्यानियतिवाद को गृहीत मिथ्यात्व क्यों कहा है ?

उत्तर : निमित्त व राग से धर्म होता है, आत्मा शरीरादि की क्रिया कर

सकता है – ऐसी मान्यतारूप अगृहीत मिथ्यात्व तो अनादि से ही था, फिर शास्त्र बांचकर अथवा कुगुरुआदि के निमित्त से मिथ्यानियतिवाद का नवीन कदाग्रह ग्रहण किया; इसलिये उसे गृहीत मिथ्यात्व कहा गया है। जिसको अनादि का अगृहीत मिथ्यात्व होता है; उसी को गृहीत मिथ्यात्व होता है। इन्द्रिय विषयों के पोषण के लिये 'जो होना होगा, वह होगा' – ऐसा कहकर एक स्वच्छन्दता का मार्ग निकाल लेते हैं, उसका नाम गृहीत मिथ्यात्व है।

प्रश्न : वस्तु का परिणमन क्रमबद्ध मानने पर तो ऐसा लगता है कि पुरुषार्थ का कुछ काम ही नहीं, पुरुषार्थ निरर्थक है; क्योंकि जब सबकुछ निश्चित है तो सम्यग्दर्शन आदि भी निश्चित मानने होंगे; फिर पुरुषार्थ करने का कहाँ अवकाश है ?

उत्तर : क्रमबद्धपर्याय को स्वीकार करने से पुरुषार्थ उड़ जाता है – ऐसा भय तो अज्ञानी को लगता है; क्योंकि हम अभी पुरुषार्थ का ही सही स्वरूप नही जानते हैं; वास्तव में क्रमबद्धपर्याय को मानने से सम्यक् पुरुषार्थ का आरंभ होता है; क्योंकि सारे जगत का परिणमन क्रमबद्ध मानने से पर्याय पर दृष्टि नहीं रहती, किसी भी पर्याय को हटाने या लाने का विकल्प नहीं रहता और दृष्टि स्वभावसन्मुख हो जाती है। यही सम्यक् पुरुषार्थ है।

जबतक फेरफार करने की दृष्टि होगी, तबतक उल्टा व निरर्थक पुरुषार्थ रहेगा और जब फेरफार की दृष्टि खतम होकर सहज स्वभाव की दृष्टि होगी तो सम्यक् पुरुषार्थ शुरु होगा। क्रमबद्धपर्याय का निर्णय करने से 'मैं पर का कर दूँ, व्यवहार करते-करते निश्चय होता है' – इत्यादि सभी उलटी मान्यतायें समाप्त हो जाती हैं और अन्दर स्वभाव में स्थिर होने का मार्ग खुल जाता है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

समाचार दर्शन -

गुरुदेवश्री की जयंती सानन्द संपन्न

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर के तत्त्वावधान में दिनांक 7 मई को गुरुदेवश्री की जन्मजयंती के उपलक्ष्य में गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल थे, जिन्होंने गुरुदेवश्री की अनेक घटनाओं का स्मरण किया। अक्टूबर 2001 के गुरुप्रसाद में छपे नेमचंद हरिलाल शाह-घाटकोपर, मुम्बई के 'पूज्य गुरुदेवश्री को सम्यग्दर्शन कब' नामक आलेख की चर्चा करते हुए बताया कि गृहीत मिथ्यात्व की अवस्था में सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति संभव नहीं है।

डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त मंचासीन ब्र.यशपालजी जैन, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री तारांचदजी सोगानी, श्रीमती कमला भारिल्ल आदि ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये। साथ ही सहज समागत अनेक स्नातक विद्वानों के अन्तर्गत पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ, पण्डित रमनजी शास्त्री एवं पण्डित सिद्धार्थजी शास्त्री ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का शुभारंभ पण्डित प्रशांतजी शास्त्री मुम्बई द्वारा मंगलाचरण से हुआ। सभा का संचालन डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा ने किया तथा आभार प्रदर्शन श्री संजयजी सेठी ने किया।

(2) देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के परिसर में दिनांक 24 से 28 अप्रैल तक आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की जन्म जयंती मनायी गयी।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभय कुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में महिला मंडल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

आयोजन में तीन लोक मण्डल विधान एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित प्रवचनसार मंडल विधान का भी आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अनिलजी धवल एवं पण्डित दीपकजी धवल भोपाल द्वारा संपन्न हुये। **– कांतिभाई मोटानी, मुम्बई**

(3) अमेरिका स्थित **स्वाध्याय इन्फो ग्रुप** के माध्यम से टेली कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा दिनांक 2 मई को गुरुदेव जयंती का कार्यक्रम बहुत धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम डॉ.संजीवजी गोधा जयपुर के मार्मिक उद्बोधन के उपरांत **चैटेनोगा** से सुशीलाबेन व नवीनभाई, **कैलिफोर्निया** से मुकुन्दभाई, **शिकागो** से प्रदीपभाई व कुशलजी, **नॉर्थ कैरोलिना** से इन्दिराबेन, **बोस्टन** से संगीताबेन, सुधाजी मेहता, मणिबेन शाह, **पिट्सबर्ग** से शांतिभाई म्होनोत तथा **न्यूजर्सी** से मनीषाबेन ने गुरुदेवश्री के प्रति अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने किया।

(4) छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल एवं अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 28 अप्रैल को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का 128वाँ उपकार दिवस संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के वीडियो प्रवचन हुये एवं विविध वक्ताओं द्वारा गुरुदेवश्री के जीवनपर मंगल उद्गार व्यक्त किये गये। साथ ही एक धार्मिक गोष्ठी का भी आयोजन हुआ। सायंकाल बाल कक्षा एवं जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त अनेक विद्वानों द्वारा गुरुदेवश्री के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर उद्गार व्यक्त किये गये। रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

वेदी शिलान्यास एवं पंचपरमेष्ठी विधान संपन्न

गौरझामर-सागर (म.प्र.) : यहाँ श्री 1008 शान्तिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मन्दिर ट्रस्ट द्वारा निर्माणाधीन शांतिनाथ जिनालय में दिनांक 14 से 16 अप्रैल तक वेदी शिखर शिलान्यास एवं जिनबिम्बों की भव्य अगवानी पर श्री पंचपरमेष्ठी विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा दोनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक पर एवं पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में सागर, करेली, केसली, पथरिया, दमोह, गढाकोटा, रहली, आरोन, जबेरा, भोपाल, मुम्बई, जयपुर आदि अनेक स्थानों से लगभग 700-800 साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया। विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. नन्हे भैया सागर एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली द्वारा संपन्न हुये। कार्यक्रम का संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री एवं निर्देशन पण्डित सचिन्द्रजी शास्त्री गढाकोटा ने किया।

इसके अतिरिक्त दिनांक 17 व 18 अप्रैल को डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा सिद्धपूजन, पंचपरावर्तन, प्रवचनसार की 80वीं गाथा पर प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

– सचिन्द्र शास्त्री, गढाकोटा

डॉ. संजीवजी गोधा को बधाई

जयपुर (राज.) : यहाँ जौहरी बाजार स्थित श्री दिग.जैन तेरापंथी पंचायती बड़ा मंदिर (टोडरमलजी का मंदिर) के चुनावों में दिनांक 14 मई को सर्वसम्मति से युवा विद्वान डॉ.संजीवकुमारजी गोधा को महामंत्री पद के लिये चुना गया। मंदिर प्रबंध कमेटी के अध्यक्ष श्री विनोदजी कासलीवाल, उपाध्यक्ष श्री कुशलजी पाटनी, सहमंत्री श्री हर्षवर्धनजी, कोषाध्यक्ष श्री कांतिजी गंगवाल एवं अभयजी लुहाड़िया को चुना गया। स्मारक ट्रस्ट परिवार की ओर से सम्माननीय युवा विद्वान एवं पूरी कार्यकारिणी को हार्दिक बधाई।

बाल संस्कार शिविर संपन्न

(1) कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, तीर्थधाम मंगलायतन एवं मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर समिति पिड़ावा द्वारा आध्यात्मिक बाल संस्कार शिविर का आयोजन दिनांक 29 अप्रैल से 7 मई तक किया गया।

यह शिविर मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश के 101 स्थानों पर आयोजित किया गया, जिसका सामूहिक उद्घाटन समारोह दिनांक 29 अप्रैल को देहगांव-रायसेन (म.प्र.) में हुआ। समारोह की अध्यक्षता पण्डित नागेशजी पिड़ावा ने एवं ध्वजारोहण श्री अनिलकुमारजी उज्जैन (पी.डब्ल्यू.डी. इंजीनियर) ने किया। शिविर का सामूहिक समापन समारोह दिनांक 7 मई को कोटा (राज.) में किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन ने की। विशिष्ट अतिथियों के अन्तर्गत श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री अरुणजी बज कोटा, श्री चिन्मयजी कोटा, पण्डित ज्ञानचंदजी झालावाड़, श्री सत्यनारायणजी, श्री रूपेशजी समैया भोपाल एवं श्री राजेन्द्रजी लाम्बावास आदि महानुभाव उपस्थित थे।

समारोह में पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर द्वारा मंगलमय विधान कराया गया। संपूर्ण शिविर का निरीक्षण श्री श्रवणकुमारजी समैया देहगांव, पण्डित नागेशजी पिड़ावा, व्याख्याता सुरेन्द्रजी पिड़ावा, संकल्पजी शास्त्री कोटा एवं अरिहंतजी मड़ावरा द्वारा किया गया।

(2) राजकोट (गुज.): यहाँ दिनांक 3 से 7 मई तक बाल संस्कार शिक्षण शिविर अत्यंत उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, चैतन्यजी शास्त्री, सचिनजी सागर एवं पंकजजी शास्त्री द्वारा प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। शिविर में लगभग 100 बालक-बालिकाओं ने लाभ लिया।

(3) देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के परिसर में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा जवेरी बाजार मुम्बई द्वारा दिनांक 30 अप्रैल से 7 मई तक 19वाँ बाल संस्कार शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री, श्री आशीषजी शास्त्री, श्री विवेकजी शास्त्री, श्री जितेन्द्रजी शास्त्री, श्री देवांगजी शास्त्री, श्री नकुलजी शास्त्री, श्री अभिषेकजी शास्त्री, श्री प्रतीकजी शास्त्री, ब्र.चेतना बेन, श्रीमती स्वस्ति विराग जैन द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में जिनेन्द्र पूजन के अतिरिक्त दोपहर में विभिन्न कक्षाओं के पश्चात् प्रोजेक्टर पर विशेष अध्ययन कराया गया। रात्रि में भक्ति के उपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगीतमय कथा, प्रोजेक्टर पर विभिन्न प्रेरणादायी वीडियो सी.डी. का प्रदर्शन किया गया।

– वीनूभाई शाह-उल्लासभाई जोबालिया, मुम्बई

(4) सागर (म.प्र.) : यहाँ परकोटा स्थित श्री महावीर जिनालय में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, शाखा बण्डा, के.के.पी.पी.एस. उज्जैन एवं कुन्दकुन्द पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के संयुक्त तत्त्वावधान में बुंदेलखण्ड के 31 स्थानों पर एक साथ हुये ग्रुप

शिविर का उद्घाटन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर द्वारा प्रवचन हुये। शिविर में विभिन्न स्थानों पर 40 विद्वानों द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में संयोजन एवं समन्वयन का कार्य रितेशजी इन्दौर, राहुलजी शास्त्री बण्डा, संजय सिद्धार्थजी इन्दौर, मयंकजी शास्त्री बण्डा, सम्मेदजी जैन इन्दौर एवं अन्य सहयोगियों ने किया। आभार प्रदर्शन श्री विकासजी मोदी ने किया।

(5) जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 7 से14 मई तक अष्टम आवासीय जैनत्व बाल संस्कार शिविर संपन्न हुआ।

शिविर का उद्घाटन दिनांक 7 मई को मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री नेमीचंदजी जैन सुनीलकुमारजी जैन पायल परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् प्रात: एवं दोपहर को वर्गवार सामूहिक कक्षाओं का आयोजन हुआ। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त रात्रि में विभिन्न ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इसमें विरागजी शास्त्री द्वारा संगीतमय कथा मुख्य आकर्षण का केन्द्र रही। शिविर में जबलपुर, शहपुरा, जबेरा, कटनी, कटंगी, पनागर, इन्दौर, बिलासपुर, दमोह, सागर आदि अनेक नगरों के लगभग 350 बालक-बालिकाओं ने लाभ लिया।

इस अवसर पर श्री विरागजी शास्त्री, श्री अनुभवजी जैन करेली, श्री राजेन्द्रजी जैन खड़ैरी, श्री प्रियंकजी शास्त्री रहली, डॉ. मनोजजी जैन, ब्र. श्रेणिकजी जैन, श्री संतोषजी शास्त्री आदि टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के छात्रों, आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन दिल्ली व शाश्वत धाम उदयपुर की 6 बालिकाओं सहित कुल 22 विद्वानों ने 17 कक्षाओं में अध्यापन कार्य किया। शिविर की सफलता में फैडरेशन एवं वीतराग विज्ञान मण्डल के सभी कार्यकर्त्ताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

अक्षय तृतीया पर्व मनाया

जयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं श्री वीतराग विज्ञान महिला मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 28 अप्रैल को अक्षय तृतीय महापर्व मनाया गया।

इस अवसर पर प्रात: जिनेन्द्र पूजन के उपरान्त अक्षय तृतीय पूजन की जयमाला पर पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। रात्रि में ज्ञानदर्पण विषय पर डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' द्वारा प्रवचन हुआ। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का वीडियो प्रवचन भी आयोजित किया गया। **– जिनकुमार शास्त्री**

आवश्यक सूचना

अमेरिका में तत्त्वप्रचार के अवसर पर शिकागो में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री – फाल्गुनी बेन के घर पर ठहरेंगे।
संपर्क सूत्र – फोन– +1-224-226-3995, 1-847-330-1088 (घर)

गुरुवाणी मंथन शिविर संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ग्रेटर नोएडा ग्वालियर द्वारा आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की जन्मजयंती के उपलक्ष्य में आयोजित चतुर्थ गुरुवाणी मंथन शिविर दिनांक 22 से 26 अप्रैल तक सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार के कर्त्ताकर्माधिकार पर, दोपहर में समयसार की 17-18 गाथा पर एवं रात्रि में प्रवचनसार की 80वीं गाथा पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त समागत विद्वान पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा इन्हीं प्रवचनों के मुख्य बिन्दुओं के आधार पर गुरुदेवश्री की शैली और विषय का परिचय प्रतिदिन 6 प्रवचनों के माध्यम से कराया गया। शिविर में श्री जिनेन्द्र शोभायात्रा एवं कर्मदहन मण्डल विधान का भी आयोजन हुआ। दिनांक 25 अप्रैल को दृष्टि का विषय भगवान आत्मा विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें आमंत्रित विद्वानों के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पण्डित महेशचंदजी, पण्डित कमलेशजी, पण्डित नेमीचंदजी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम के मध्य में पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के दो प्रवचनों का लाभ मिला। समस्त कार्यक्रम श्री सुनीलजी शास्त्री मुरार के संयोजकत्व में संपन्न हुये।

मंदिर शिलान्यास सानन्द संपन्न

खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 19 से 21 अप्रैल तक श्री चन्द्रप्रभ मण्डल विधानपूर्वक मंदिर शिलान्यास कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। कार्यक्रम में सागर, जबलपुर, छिन्दवाड़ा, करेली मुमुक्षु मण्डलों का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर लगभग 600 साधर्मियों ने लाभ लिया। विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा संपन्न हुये।

हर्ष का विषय है कि जिनालय में विराजमान होने वाली तीनों प्रमुख प्रतिमाएं टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक भानुजी शास्त्री, मनीषजी कहान एवं राजेन्द्रजी शास्त्री के परिवारों द्वारा विराजमान की जायेंगी। **– पंकज शास्त्री**

You tube पर जैनधर्म सीखें

बालबोध पाठमालाओं को आधार बनाकर णमोकार मंत्र एवं जैनधर्म की आधारभूत बातें सीखने के लिये अब **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** के वीडियो प्रवचन You tube पर उपलब्ध हैं। आप You tube पर जाकर dr. Sanjeev Godha channel से इसका लाभ ले सकते हैं। आप स्वयं लाभ लें एवं जैनधर्म सीखने की इच्छा रखने वालों को बताएं। अधिक जानकारी हेतु श्री सात्विक जैन से 7610027910 पर अथवा 9829064980 पर संपर्क करें।

करणानुयोग शिविर

वक्ता – उज्ज्वला शहा, दिनांक 17 से 21 जून 2017
(प्रतिदिन 6 घंटे तथा अंतिम दिन 4 घंटे प्रवचन होंगे)

• आपके आने की पूर्व सूचना देवलाली/मुम्बई ऑफिस में अवश्य दें, ताकि आपकी समुचित व्यवस्था की जा सके। • आवास एवं भोजन की व्यवस्था निःशुल्क रहेगी। • सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका जीवकाण्ड भाग 1 और 2 सभी साधर्मियों को पूर्व शिविरों में दिया गया था, वह अवश्य साथ लावें। • यह शास्त्र देवलाली में सशुल्क उपलब्ध रहेगा। **संपर्क सूत्र –** (1) दिनेशभाई शहा, 157/9, निर्मला निवास, सायन (पूर्व), मुम्बई-400022 फोन – 022-24073581 www.jainsiddhant.org और (2) पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर, लाम रोड, देवलाली-नासिक 422401 (महा.) फोन – 0253-2491044 अथवा (3) 173/175, मुम्बादेवी रोड़, मुम्बई 400002 फोन – 022-23425241

पण्डित विपिनजी शास्त्री, मुम्बई द्वारा –

अमेरिका में धर्मप्रभावना

शिकागो (अमेरिका) : यहाँ महावीर जयंती के अवसर पर लगभग 300 साधर्मियों की उपस्थिति में श्री महावीर पंचकल्याणक विधान आनन्द के साथ संपन्न हुआ। इसी प्रवास के दौरान शिकागो मण्डल ने दो दिन द्रव्य-गुण-पर्याय विषय पर 3-3 घण्टे सेमिनार का आयोजन किया, जिसका युवावर्ग ने विशेष लाभ लिया।

पण्डित विपिनजी मुम्बई के इसी एक माह के प्रवास के दौरान अमेरिका के कई नगरों में भ्रमण हुआ, जिसके अन्तर्गत न्यूजर्सी, नोरिस टाउन (पेन्सिलवेनिया), केरी (नॉर्थ केरोलोना) आदि नगरों में भी प्रवचनों का आयोजन हुआ। शिकागो प्रवास के दौरान प्रतिदिन स्वाध्याय का लाभ समाज को मिला। ज्ञातव्य है कि आप पिछले 12 वर्षों से निरंतर अमेरिका में दशलक्षण पर्व एवं अन्य अनेक अवसरों पर अपने व्यापारादिक कार्यों के साथ-साथ तत्त्वप्रचार के कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। **– फाल्गुनी बेन शाह**

हार्दिक बधाई !

टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की छात्रा **कु. श्रुति जैन** को उपाध्याय वरिष्ठ में राज्य में प्रथम स्थान (अल्पसंख्यक बालिका वर्ग) प्राप्त करने के उपलक्ष्य में 'इंदिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया, जिसके अन्तर्गत एक लाख रुपये एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर कु. श्रुति जैन ने आदरणीय डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए सफलता का श्रेय महाविद्यालय के गुरुजनों को दिया। ज्ञातव्य है कि कु. श्रुति जैन महाविद्यालय के स्नातक एवं अध्यापक डॉ. दीपक जैन 'वैद्य' की सुपुत्री हैं।

टोडरमल महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

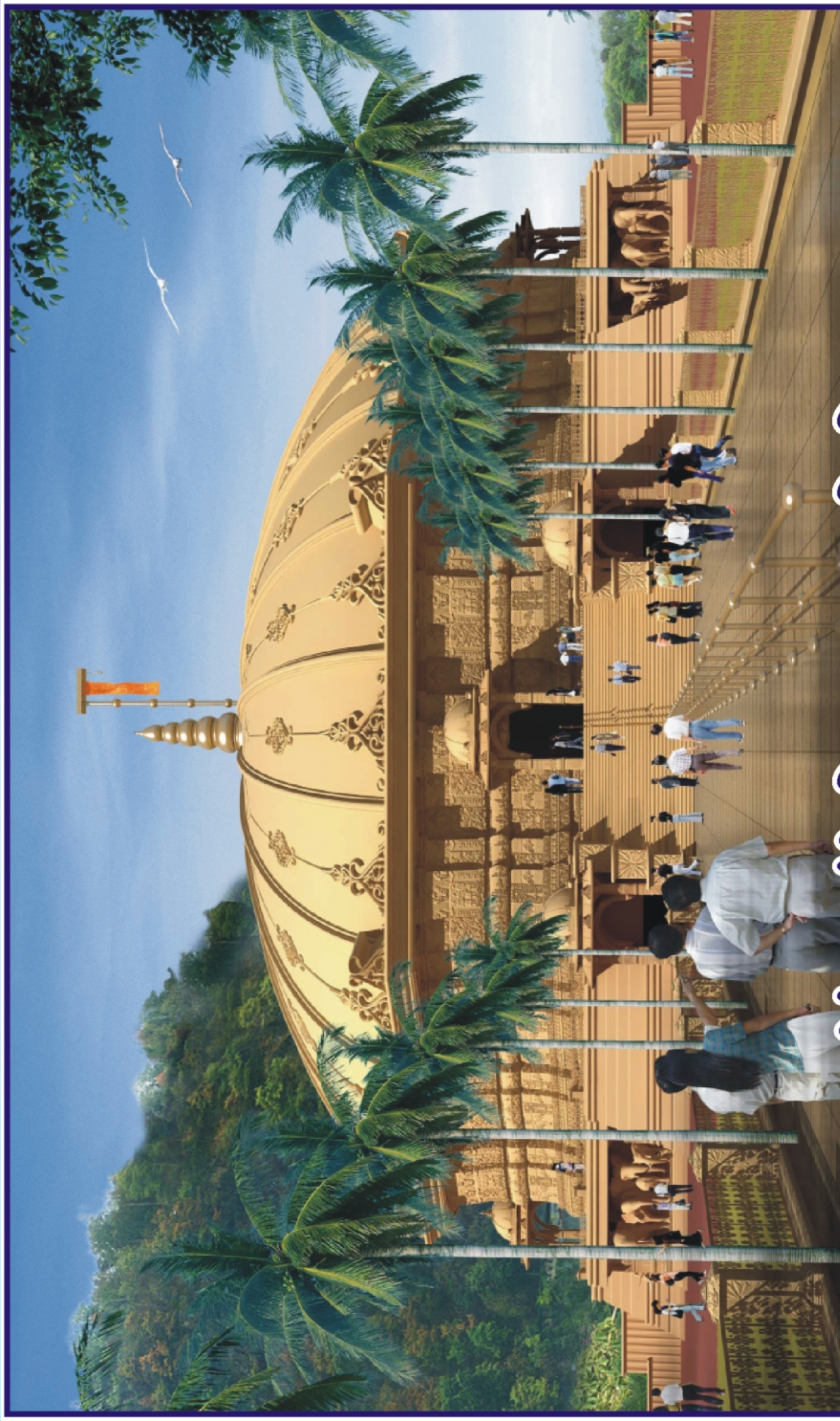

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन का प्रस्तावित चित्र

R.N.I. No. 38278/83 Postal Regd. No. JaipurCity/421/2015-17

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में विराजमान होने वाली 1143 प्रतिमाएं

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**